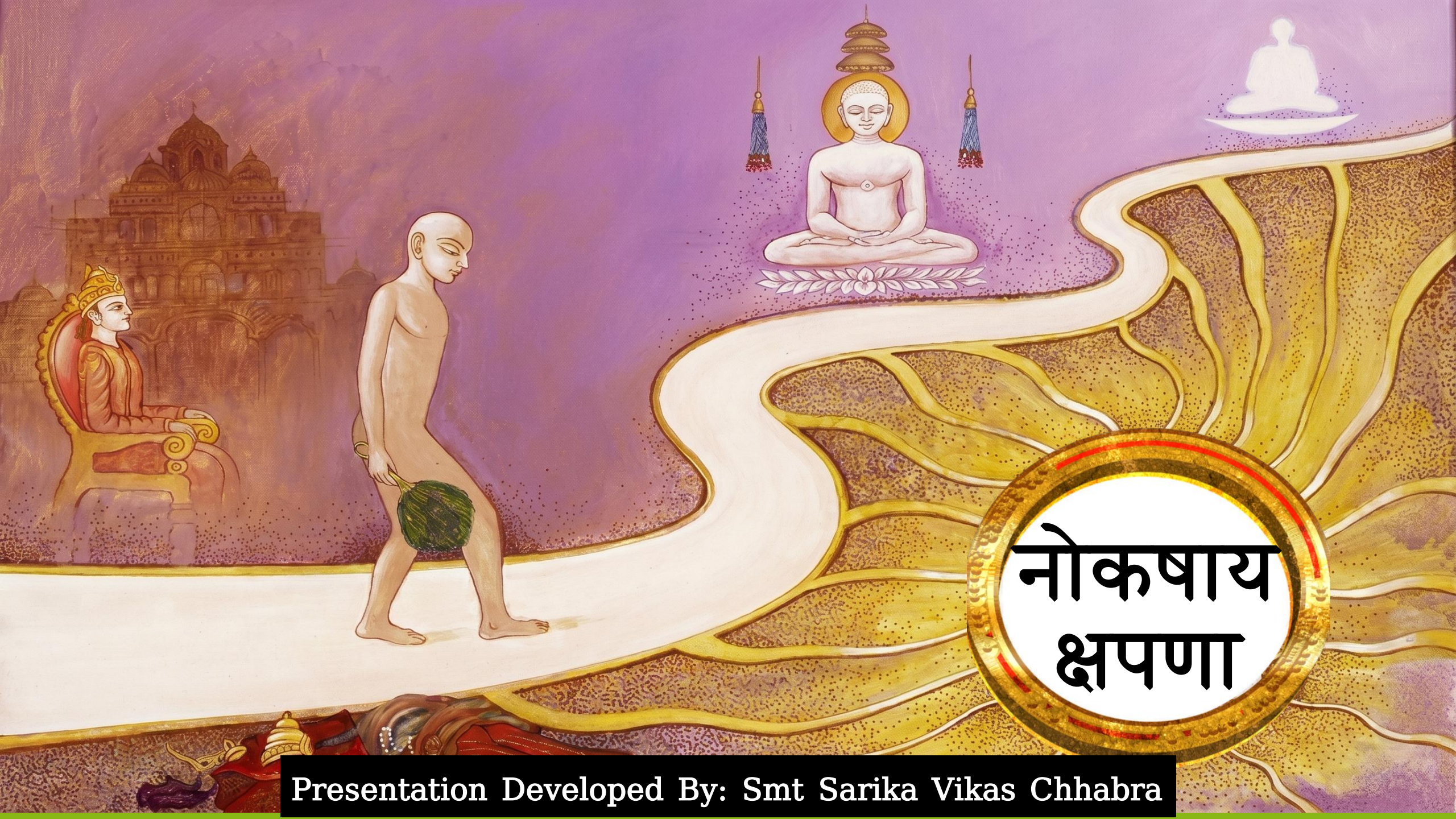

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

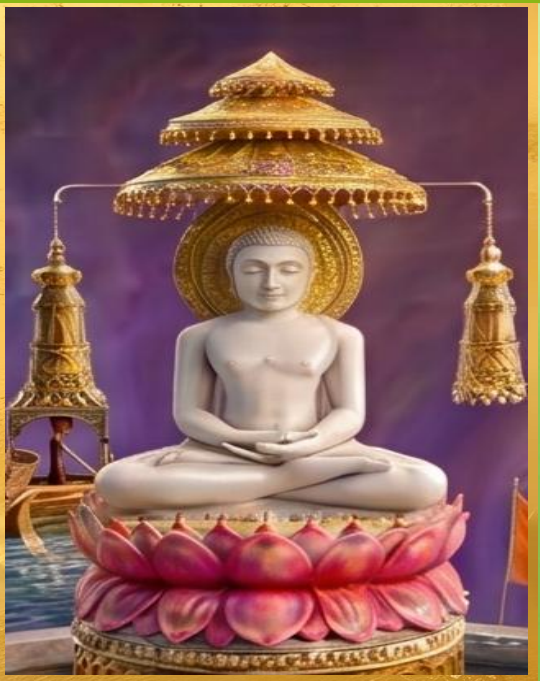

सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

ठिदिबंधसहस्सगदे, संढो संकामिदो हवे पुरिसे ।
पडिसमयमसंखगुणं, संकामगचरिमसमओत्ति ॥441॥

- अन्वयार्थः (ठिदिबंधसहस्सगदे) हजारो स्थिति-बंध व्यतीत होने पर (संढो) नपुंसक वेद (पुरिसे) पुरुषवेद में (संकामिदो हवे) संक्रमित होता है।
- (संकामगचरिमसमओत्ति) संक्रामक के अंतिम समय पर्यन्त (पडिसमयं) प्रत्येक समय में (असंखगुणं) असंख्यात गुणित द्रव्य का संक्रमण होता है ॥441॥

www.JainKosh.org

नपुंसक वेद की क्षपणा

अंतरकरण के पश्चात् नपुंसकवेद की क्षपणा प्रारंभ होती है ।

संक्रमण का द्रव्य प्रत्येक समय असंख्यात गुणा होता है ।

संख्यात हजार स्थितिकांडकों के होने पर अंतिम कांडक की अंतिम फाली का पतन होता है, तब नपुंसकवेद का सत्त्व नष्ट होता है ।

इस प्रकार नपुंसकवेद को पर-प्रकृति संक्रमण के द्वारा क्षय कर दिया गया । अब मोहनीय की 12 प्रकृतियों का सत्त्व शेष है ।

www.JainKosh.org

www.JainKosh.org

बंधेण होदि उदओ, अहिओ उदएण संकमो अहिओ ।
गुणसेढि असंखेज्जा, पदेसग्गेण बोधव्वा ॥442॥

- अन्वयार्थः (बंधेण) बंध की अपेक्षा (उदओ) उदय (अहिओ) अधिक (होदि) है।
- (उदएण) उदय से (संकमो) संक्रमण (अहिओ) अधिक है।
- (पदेसग्गेण) प्रदेशाग्र की अपेक्षा से (गुणसेढि) गुणश्रेणी (असंखेज्जा) असंख्यातगुणी (बोधव्वा) जानना चाहिए ॥442॥

www.JainKosh.org

वेद का सत्त्व-द्रव्य

मोहनीय कर्म का द्रव्य

- $= \frac{\text{स } \partial \text{ १२–}}{\text{७}}$

बंध, उदय आदि द्रव्यों का अल्प-बहुत्व

जो मोहनीय का समयप्रबद्ध बांधा जा रहा है, वह सबसे अल्प है । क्योंकि वह एक समयप्रबद्ध का सातवां भाग है । $\frac{\text{स}\partial}{७}$ । इसमें पुरुषवेद का बंध द्रव्य आधा है । $\frac{\text{स}\partial}{७।२}$

जो पुरुषवेद का उदय द्रव्य है, वह बंध से असंख्यात गुणा है ।

पुरुषवेद का सत्त्व द्रव्य; वेद द्रव्य का 2/48 भाग है, नपुंसक वेद का सत्त्व द्रव्य 42/48 भाग है ।

www.JainKosh.org

पद	संदृष्टि
पुरुषवेद का सत्त्व द्रव्य	$\dfrac{\text{स}\,\partial\,\text{१२–।२}}{\text{७।१०।४८}}$
इस सत्त्व द्रव्य में अपकर्षण भागहार से भाग देने पर अपकृष्ट द्रव्य का प्रमाण आता है ।	$\dfrac{\text{स}\,\partial\,\text{१२–।२}}{\text{७।१०।४८।ओ}}$
उसे पल्य/असंख्यात से भाग देने पर गुणश्रेणि का द्रव्य आता है ।	$\dfrac{\text{स}\,\partial\,\text{१२–।२}}{\text{७।१०।४८।ओ।}\frac{\text{प}}{\partial}}$
इसे शलाकाओं से भाग देने पर वर्तमान निषेक का द्रव्य आता है ।	$\dfrac{\text{स}\,\partial\,\text{१२–।२}}{\text{७।१०।४८।ओ।}\frac{\text{प}}{\partial}\text{।८९}}$
पूर्व निषेक का द्रव्य जोड़ने के लिए अधिक की संदृष्टि करी है ।	$\dfrac{\text{स}\,\partial\,\text{१२–।२+}}{\text{७।१०।४८।ओ।}\frac{\text{प}}{\partial}\text{।८९}}$

यह उदय द्रव्य; बंध द्रव्य से असंख्यात गुणा है ।

नपुंसक वेद का संक्रमण द्रव्य

उदय द्रव्य से नपुंसकवेद का संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा है ।

नपुंसकवेद का सत्त्व-द्रव्य = $\frac{\text{स}\partial १२-।४२}{७।१०।४८}$

इसमें गुणसंक्रमण भागहार का भाग देने पर संक्रमण द्रव्य आता है । $\frac{\text{स}\partial १२-।४२}{७।१०।४८।\text{गु}}$

www.JainKosh.org

बंध, उदय, संक्रमण द्रव्य का अल्प-बहुत्व

पद	गुणकार	संदृष्टि
पुरुषवेद का बंध द्रव्य	स्तोक	$\frac{\text{स } \partial}{\text{७ \| २}}$
पुरुषवेद का उदय द्रव्य	असंख्यात गुणा	$\frac{\text{स } \partial \text{ १२ } - \text{ \| २ } +}{\text{७ \| १० \| ४८ \| ओ \| } \frac{\text{प}}{\partial} \text{ \| ८९}}$
नपुंसकवेद का संक्रमण द्रव्य	असंख्यात गुणा	$\frac{\text{स } \partial \text{ १२ } - \text{ \|४२}}{\text{७ \| १० \| ४८ \| गु}}$

www.JainKosh.org

विशेष – जिन प्रकृतियों का अधःप्रवृत्त संक्रमण हो रहा है, वह द्रव्य भी उदय द्रव्य से असंख्यात गुणा है ।

प्रश्न- अपकर्षण भागहार से अधःप्रवृत्त संक्रमण भागहार असंख्यात गुणा है, तब उदय द्रव्य से अधःप्रवृत्त संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा कैसे हो सकता है ?

उत्तर – अपकर्षित द्रव्य का एक असंख्यातवां भाग ही उदय में दिया है । इसलिए संक्रमण द्रव्य से उदय द्रव्य असंख्यात गुणा हीन है ।

$$\frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२}-|\,\text{२}+}{\text{७}\,|\,\text{१०}\,|\,\text{४८}\,|\,\text{ओ}\,|\,\frac{\text{प}}{\partial}\,|\,\text{८५}} \quad \text{से} \quad \frac{\text{स}\,\partial\,\text{१२}-|\,\text{२}}{\text{७}\,|\,\text{१०}\,|\,\text{४८}\,|\,\text{अधः}}$$

असंख्यात गुणा है ।

www.JainKosh.org

गुणसेढि असंखेज्जा, पदेस-अग्गेण संकमो उदओ ।
से काले से काले, भज्जो बंधो पदेसग्गो ॥443॥

- अन्वयार्थः (पदेसअग्गेण) प्रदेशपुंज की अपेक्षा से (संकमो) संक्रमण और (उदओ) उदय (से काले से काले) अनन्तर-अनन्तर समय में (असंखेज्जा गुणसेढि) असंख्यातगुणित श्रेणीरूप से है।
- (पदेसग्गो) प्रदेशपुंज का आश्रय करके (बंधो) बंध (भज्जो) भजनीय है ॥443॥

www.JainKosh.org

प्रत्येक समय में उदय और संक्रमण द्रव्य

क्षपणा के प्रत्येक समय में उदय द्रव्य और संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा होता है । अर्थात् पहले समय के उदय द्रव्य से अनंतर समय का उदय द्रव्य असंख्यात गुणा है ।

इसी प्रकार पहले समय के संक्रमण द्रव्य से अनंतर समय में संक्रमण द्रव्य असंख्यात गुणा है ।

इस प्रकार अंतिम समय तक जानना चाहिए ।

www.JainKosh.org

प्रत्येक समय असंख्यात गुणा बढ़ता हुआ

उदय

प्रथम समय: (स ∂ १२ – | २ +) / (७ | १० | ४८ | ओ | प/∂ | ८५)

द्वितीय समय: (स ∂ १२ – | २ + | ४) / (७ | १० | ४८ | ओ | प/∂ | ८५)

तृतीय समय: (स ∂ १२ – | २ + | १६) / (७ | १० | ४८ | ओ | प/∂ | ८५)

संक्रमण

प्रथम समय: (स ∂ १२ – | २) / (७ | १० | ४८ | गु)

द्वितीय समय: (स ∂ १२ – | २) / (७ | १० | ४८ | गु/∂)

तृतीय समय: (स ∂ १२ – | २) / (७ | १० | ४८ | गु/∂∂)

nKosh.org

प्रत्येक समय में बंध द्रव्य

परंतु बंध के प्रति ऐसा नियम नहीं है । एक समय से दूसरे समय का बंध द्रव्य बढ़ सकता है, घट सकता है अथवा तदवस्थ रह सकता है । क्योंकि बंध की वृद्धि, हानि अथवा अवस्थितता योग से संबंध रखती है ।

एक समय के योग से अनंतर समय में चार प्रकार की वृद्धि या चार प्रकार की हानि या तदवस्थ रहनेरूप अवस्था हो सकती है । तदनुसार प्रदेश-बंध में भी वृद्धि, हानि या अवस्थिति होती है ।

योग में अनंतभागवृद्धि एवं अनंतगुणवृद्धि नहीं होती है । शेष चार प्रकार की वृद्धि ही संभव है ।

इदि संढं संकामिय, से काले इत्थिवेदसंकमगो । अण्णं ठिदिरसखंडं, अण्णं ठिदिबंधमारभई ॥444॥

- अन्वयार्थः (इदि) इस प्रकार (संढं संकामिय) नपुंसकवेद का संक्रमण करके (से काले) तदनन्तर काल में (इत्थिवेदसंकमगो) स्त्रीवेद का संक्रामक होता है।
- वहाँ (अण्णं ठिदिरसखंडं) पूर्व की अपेक्षा अन्य स्थितिकांडक, अन्य अनुभागकांडक और (अण्णं ठिदिबंधं) अन्य स्थिति-बंध (आरभई) प्रारंभ करता है ॥444॥

www.JainKosh.org

स्त्रीवेद की क्षपणा

नपुंसकवेद का संक्रमण करके अगले समय से स्त्रीवेद का संक्रामक होता है ।

नपुंसकवेद की अपेक्षा स्त्रीवेद अप्रशस्ततर है । इसलिए नपुंसकवेद का क्षय करके स्त्रीवेद की क्षपणा प्रारंभ होती है ।

तब पूर्व के स्थितिकांडकघात, अनुभागकांडकघात और स्थितिबंधापसरण समाप्त होते हैं । नवीन कांडकघात एवं बंधापसरण प्रारंभ होते हैं ।

www.JainKosh.org

थी अद्धा संखेज्जाभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो । वस्साणं संखेज्जं, थीसंकंतापगद्धंते ॥445॥

- अन्वयार्थः (थी अद्धा) स्त्रीवेद के क्षपणाकाल का (संखेज्जाभागेपगदे) संख्यातवाँ भाग व्यतीत होने पर (तिघादिठिदिबंधो) तीन घातिया कर्मों का स्थिति-बंध (संखेज्जं वस्साणं) संख्यात वर्ष प्रमाण होता है।
- उसके पश्चात् (थीसंकंतापगद्धंते) स्त्रीवेद के संक्रमण का बहुभाग व्यतीत होने पर अंत में - ॥445॥

www.JainKosh.org

स्त्रीवेद की क्षपणा

स्त्रीवेद के क्षपणाकाल का एक संख्यात भाग बीतने पर तीन घाति कर्मों का स्थिति-बंध संख्यात वर्ष प्रमाण होता है ।

इसके पूर्व इनका असंख्यात वर्ष प्रमाण बंध होता था ।

इसके पश्चात् संख्यात हजार स्थितिकांडकों के द्वारा सत्त्व का घात करता हुआ स्त्रीवेद के अंतिम स्थितिकांडक को करता है ।

स्त्रीवेद की क्षपणा

स्त्रीवेद की क्षपणा का संख्यात बहुभाग काल बीतने पर अंतिम कांडक में स्त्रीवेद का संपूर्ण पल्य/असंख्यात प्रमाण सत्त्व ग्रहण करके इसे पुरुषवेद में संक्रमित करता है ।

शेष मोहनीय कर्मों का सत्त्व के पल्य/असंख्यात बहुभाग प्रमाण कांडक का आयाम ग्रहण करता है ।

अंतिम फाली का पतन होने पर स्त्रीवेद का क्षय हो जाता है । तब मोह की 11 प्रकृतियों का सत्त्व शेष रहता है ।

ताहे संखसहस्सं, वस्साणं मोहणीयठिदिसंतं ।
से काले संकमगो, सत्तण्हं णोकसायाणं ॥446॥

- अन्वयार्थः (ताहे) उस स्त्रीवेद के क्षपणाकाल के अंतिम समय में (मोहणीयठिदिसंतं) मोहनीय का स्थिति-सत्त्व (संखसहस्सं वस्साणं) संख्यात हजार वर्षप्रमाण है।
- (से काले) उसके अनन्तर समय में (सत्तण्हं णोकसायाणं) सात नोकषायों का (संकमगो) संक्रामक होता है ॥446॥

www.JainKosh.org

7 नोकषायों की क्षपणा

स्त्रीवेद की क्षपणा के अंत समय में मोहनीय का स्थिति-सत्त्व संख्यात हजार वर्ष प्रमाण रह जाता है । इसके पूर्व तक मोहनीय का सत्त्व असंख्यात वर्ष प्रमाण था ।

शेष कर्मों का स्थिति-सत्त्व अभी भी पल्य/असंख्यात प्रमाण है ।

स्त्रीवेद की क्षपणा के पश्चात् 7 नोकषायों का युगपत् संक्रामक होता है ।

7 नोकषाय – हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद

www.jainkosha.org

ताहे मोहो थोवो, संखेज्जगुणं तिघादिठिदिबंधो ।
तत्तो असंखगुणियो, णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥447॥

- अन्वयार्थः (ताहे) उन सात नोकषायों के संक्रमण के प्रथम समय में (मोहो थोवो) मोहनीय का स्थिति-बंध सबसे कम है।
- उससे (तिघादिठिदिबंधो) तीन घातिया कर्मों का स्थिति-बंध संख्यातगुणा है।
- (तत्तो) उससे (णामदुगं) नाम और गोत्र कर्म का स्थिति-बंध (असंखगुणियो) असंख्यातगुणा है।
- (तु) परन्तु उससे (वेयणियं) वेदनीय का स्थिति-बंध (साहियं) कुछ अधिक अर्थात् डेढ़गुणा है ॥447॥

www.JainKosh.org

स्त्रीवेद की क्षपणा के बाद स्थिति-बंध का अल्प-बहुत्व

कर्म	प्रमाण	गुणकार
मोहनीय	संख्यात हजार वर्ष	स्तोक
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
नाम-गोत्र	पल्य/असंख्यात	असंख्यात गुणा
वेदनीय	पल्य/असंख्यात	विशेष अधिक

www.JainKosh.org

ताहे असंखगुणियं, मोहादु तिघादिपयडिठिदिसंतं ।
तत्तो असंखगुणियं, णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥448॥

- अन्वयार्थ: (ताहे) वहाँ सात नोकषायों के क्षपणाकाल के प्रथम समय में (मोहादु) मोहनीय से (तिघादिपयडिठिदिसंतं) तीन घातिया कर्मों का स्थिति-सत्त्व (असंखगुणियं) असंख्यातगुणा है।
- (तत्तो) उससे (णामदुगं) नाम और गोत्र का स्थिति-सत्त्व (असंखगुणियं) असंख्यातगुणा है।
- (तु) परन्तु (वेयणियं) वेदनीय का स्थिति-सत्त्व (साहियं) विशेष अधिक है ॥448॥

www.JainKosh.org

स्त्रीवेद की क्षपणा के बाद स्थिति-सत्त्व का अल्प-बहुत्व

कर्म	प्रमाण	गुणकार
मोहनीय	संख्यात हजार वर्ष	स्तोक
3 घातिया	पल्य/असंख्यात	असंख्यात गुणा
नाम-गोत्र	पल्य/असंख्यात	असंख्यात गुणा
वेदनीय	पल्य/असंख्यात	विशेष अधिक

www.JainKosh.org

सत्तण्हं पढमट्ठिदि-खंडे पुण्णे दु मोहठिदिसंतं ।
संखेज्जगुणविहीणं, सेसाणमसंखगुणहीणं ॥449॥

- अन्वयार्थः (सत्तण्हं) सात नोकषायों का (पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे दु) प्रथम स्थितिकांडक घात पूर्ण होने पर (मोहठिदिसंतं) मोहनीय का स्थिति-सत्त्व (संखेज्जगुणविहीणं) संख्यातगुणा हीन होता है
- और (सेसाणं) शेष कर्मों का स्थिति-सत्त्व (असंखगुणहीणं) असंख्यातगुणा हीन हो जाता है ॥449॥

www.JainKosh.org

प्रथम स्थितिकांडक होने पर सत्त्व

सात नोकषायों की क्षपणा प्रारंभ होने पर नवीन स्थितिकांडक, अनुभागकांडक, स्थिति-बंध प्रारंभ होता है ।

प्रथम स्थितिकांडक पूर्ण होने पर मोहनीय का सत्त्व संख्यात गुणाहीन हो जाता है । क्योंकि संख्यात वर्ष प्रमाण सत्त्व हो जाने पर कांडक का आयाम शेष सत्त्व का संख्यात बहुभाग प्रमाण होता है ।

अन्य कर्मों का सत्त्व असंख्यात गुणाहीन होता है । क्योंकि जब पल्य के असंख्यात भाग प्रमाण सत्त्व रहता है, तब कांडक का आयाम सत्त्व का असंख्यात बहुभाग प्रमाण होता है ।

स्थितिकांडक-आयाम का प्रमाण

सत्त्वस्थान	कांडक का प्रमाण
अंत:कोड़ाकोड़ी सागर से पल्य	$\frac{\text{पल्य}}{\text{संख्यात}}$
पल्य से पल्य/संख्यात पर्यंत	सत्त्व का संख्यात बहुभाग
पल्य/असंख्यात से संख्यात वर्ष प्रमाण पर्यंत	सत्त्व का असंख्यात बहुभाग
संख्यात वर्ष	सत्त्व का संख्यात बहुभाग

www.JainKosh.org

सत्तण्हं पढमट्ठिदि-खंडे पुण्णे ति घादिठिदिबंधो । संखेज्जगुणविहीणं, अघादितियाणं असंखगुणहीणं ॥450॥

- अन्वयार्थः (सत्तण्हं) सात नोकषायों का (पढमट्ठिदिखंडे) प्रथम स्थितिकांडक (पुण्णे ति) पूर्ण होने पर (घादिठिदिबंधो) घातिया कर्मों का स्थिति-बंध (संखेज्जगुणविहीणं) संख्यातगुणा हीन होता है और
- (अघादितियाणं) तीन अघातिया कर्मों का स्थिति-बंध (असंखगुणहीणं) असंख्यातगुणा हीन होता है ॥450॥

www.JainKosh.org

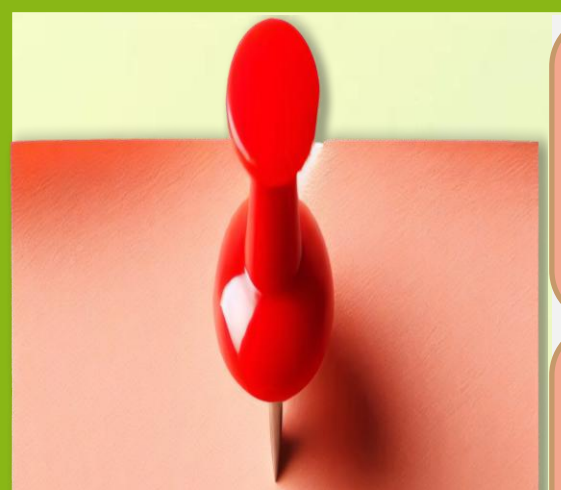

प्रथम स्थिति कांडक पूर्ण होने पर बंध

प्रथम स्थितिकांडक पूर्ण होने पर पूर्व के स्थिति-बंध से नवीन स्थिति-बंध भी घटता है ।

4 घातिया कर्मों का स्थिति-बंध संख्यात गुणा घटता है । क्योंकि घातिया कर्मों का स्थिति बंध संख्यात वर्ष प्रमाण हुआ था ।

- जब संख्यात वर्ष प्रमाण बंध होता है, तब बंधापसरण का प्रमाण संख्यात बहुभाग होता है ।

3 अघातिया कर्मों का स्थिति-बंध असंख्यात गुणा घटता है । क्योंकि पूर्व बंध असंख्यात वर्ष प्रमाण पल्य/असंख्यात होता है ।

- जब पल्य/असंख्यात प्रमाण बंध होता है, तब बंधापसरण का प्रमाण पूर्व बंध का असंख्यात बहुभाग प्रमाण होता है ।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, संखेज्जदिमं गदं तदद्धाए ।
एत्थ अघादितियाणं, ठिदिबंधो संखवस्सं तु ॥451॥

- अन्वयार्थ: (ठिदिबंधपुधत्तगदे) पृथक्त्व अर्थात् संख्यात हजार स्थिति-बंध व्यतीत होने पर (तदद्धाए) सात नोकषाय के क्षपणाकाल का (संखेज्जदिमं गदं) संख्यातवाँ भाग व्यतीत होता है।
- (एत्थ) यहाँ (अघादितियाणं) तीन अघातिया कर्मों का (ठिदिबंधो) स्थिति-बंध (संखवस्सं तु) संख्यात वर्ष प्रमाण होता है ॥451॥

www.JainKosh.org

हास्यादि 7 नोकषाय की क्षपणा

हास्यादि 7 नोकषाय के क्षपणा काल का संख्यातवां भाग बीतने पर नाम, गोत्र, वेदनीय का स्थिति-बंध संख्यात हजार वर्ष प्रमाण हो जाता है ।

इसके पूर्व इन तीनों अघातिया का स्थिति-बंध असंख्यात वर्ष प्रमाण होता था ।

www.JainKosh.org

ऐसा होने पर बंध का अल्प-बहुत्व

कर्म	स्थिति-बंध	अल्प-बहुत्व
मोहनीय	संख्यात हजार वर्ष	स्तोक
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
नाम-गोत्र	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
वेदनीय	संख्यात हजार वर्ष	विशेष अधिक

ऐसा होने के पश्चात् संख्यातों हजार स्थिति बंधापसरण होने पर संख्यात बहुभाग काल के बीतने पर 7 नोकषाय की क्षपणा होती है ।

www.JainKosh.org

ठिदिखंडपुधत्तगदे, संखाभागा गदा तदद्धाए ।
घादितियाणं तत्थ य, ठिदिसंतं संखवस्सं तु ॥452॥

- अन्वयार्थः (ठिदिखंडपुधत्तगदे) पृथक्त्व अर्थात् (संख्यात हजार) स्थितिकांडकों के हो जाने पर सात नोकषायों के क्षपणाकाल का (संखाभागा गदा) संख्यात बहुभाग व्यतीत हो जाता है ।
- (तत्थ य) उस समय (घादितियाणं) तीन घातिया कर्मों का (ठिदिसंतं) स्थिति-सत्त्व (संखवस्सं तु) संख्यात वर्ष प्रमाण रह जाता है ॥452॥

www.JainKosh.org

7 नोकषायों की क्षपणा का संख्यात बहुभाग बीतने पर 3 घातिया कर्मों का स्थिति-सत्त्व संख्यात हजार वर्ष प्रमाण शेष रहता है । तब स्थिति-सत्त्व का अल्प-बहुत्व इस प्रकार रहता है —

कर्म	प्रमाण	गुणकार
मोहनीय	संख्यात हजार वर्ष	स्तोक
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
नाम-गोत्र	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा
वेदनीय	असंख्यात वर्ष	विशेष अधिक

यहाँ से चारों घातिया कर्मों के स्थितिकांडक का आयाम सत्त्व का संख्यात बहुभाग प्रमाण हो जाता है ।

www.JainKosh.org

पडिसमयं असुहाणं, रसबंधुदया अणंतगुणहीणा ।
बंधो वि उदयादो, तदणंतरसमय उदयोथ ॥453॥

- अन्वयार्थः (असुहाणं रसबंधुदया) अशुभ प्रकृतियों का अनुभाग-बंध और अनुभाग-उदय (पडिसमयं) प्रतिसमय (अनंतगुणहीणा) अनंतगुणा हीन होता है।
- (उदयादो) अनुभाग-उदय से (बंधो वि) अनुभाग-बंध भी अनन्तगुणा हीन है (य) और
- (तदणंतर समय उदयोथ) इस बंध से उसके पश्चात् के समय का उदय अनन्तगुणा हीन होता है ॥453॥

www.JainKosh.org

प्रत्येक समय में अनुभाग बंध और उदय

अध:प्रवृत्तकरण से ही प्रत्येक समय परिणामों में अनंतगुणा विशुद्धि बढ़ती है ।

इससे प्रत्येक समय में अप्रशस्त प्रकृतियों का अनुभाग बंध अनंतगुणा हीन होता है – यह स्पष्ट ही है ।

इसी से यह भी जाना जाता है कि प्रत्येक समय में अप्रशस्त कर्मों का अनुभाग उदय भी अनंतगुणाहीन हो रहा है । अन्यथा अनंतगुणा विशुद्धि कैसे बढ़ती ।

अत: यह कहा है कि क्षपणा करते हुए प्रत्येक समय अनुभाग में बंध और उदय अनंतगुणाहीन होते जाते हैं ।

www.jainkosh.org

एक ही समय में अनुभाग बंध और उदय का विचार करें तो उदय से बंध अनंतगुणाहीन होता है । क्योंकि बंध तो वर्तमान में एक समयमात्र का है । परंतु उदय पूर्व सत्कर्म का है । अत: उदय से बंध अनंतगुणाहीन है ।

एक समय के बंध से अगले समय का उदय अनंतगुणाहीन होता है । उससे उसी समय का बंध अनंतगुणाहीन होता है । उससे अनंतर समय का उदय अनंतगुणाहीन होता है । इस प्रकार क्रमश: घटता हुआ अनुभाग बंध और उदय जानना ।

समय	उदय	बंध
विवक्षित समय	अनंत	अनंत/ख
अनंतर समय	अनंत/(ख × ख)	अनंत/(ख × ख × ख)
अनंतर समय	अनंत/(ख × ख × ख × ख)	अनंत/(ख × ख × ख × ख × ख)

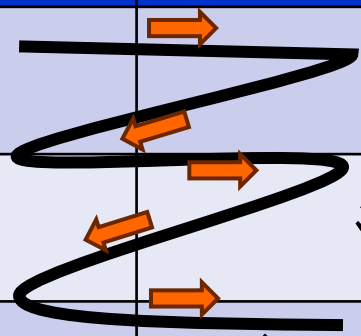

बंधेण होदि उदओ, अहियो उदएण संकमो अहियो । गुणसेढि अणंतगुणा, बोधव्वा होदि अणुभागे ॥454॥

- अन्वयार्थः (बंधेण) बंध से (उदओ) उदय (अहियो) अधिक (होदि) होता है और
- (उदएण) उदय से (संकमो) संक्रमण (अहियो) अधिक होता है।
- इस प्रकार (अणुभागे) अनुभागसंबंधी (अणंतगुणा गुणसेढि) अनन्तगुणित गुणश्रेणि (बोधव्वा होदि) जानने योग्य है। अर्थात् यहाँ अधिक का प्रमाण अनन्तगुणा है ॥454॥

'गुणसेढि' का अर्थ 'गुणकार पंक्ति' है ।

www.JainKosh.org

अनुभाग संबंधी अल्पबहुत्व

पद	गुणकार
अनुभाग-बंध	स्तोक
अनुभाग-उदय	अनंत गुणा
अनुभाग-संक्रमण	अनंत गुणा

चूंकि जितना सत्त्व है, वह तदवस्थरूप से ही अन्य प्रकृति में संक्रमित होता है । अत: वह सर्वाधिक है ।

सत्त्व जितना उदय नहीं होता क्योंकि परिणामों की विशुद्धि प्रतिपल बढ़ती जा रही है । इसलिए संक्रमण से उदय अनंत गुणाहीन है ।

उदय से बंध अनंतगुणाहीन विशुद्धता के कारण है ।

www.Jain

3 घातिया कर्म

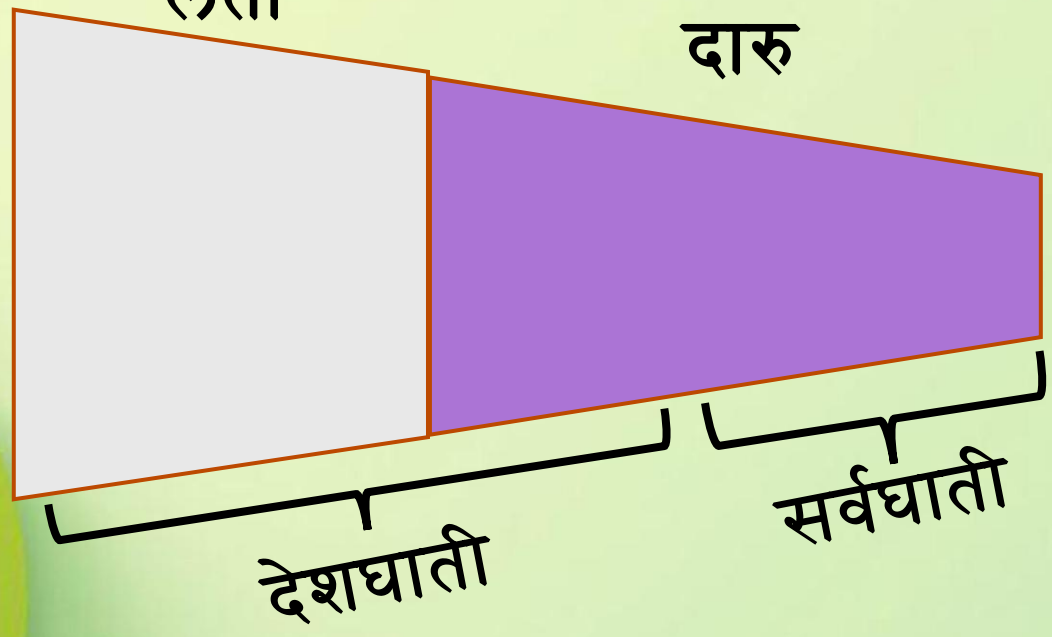

मोहनीय कर्म

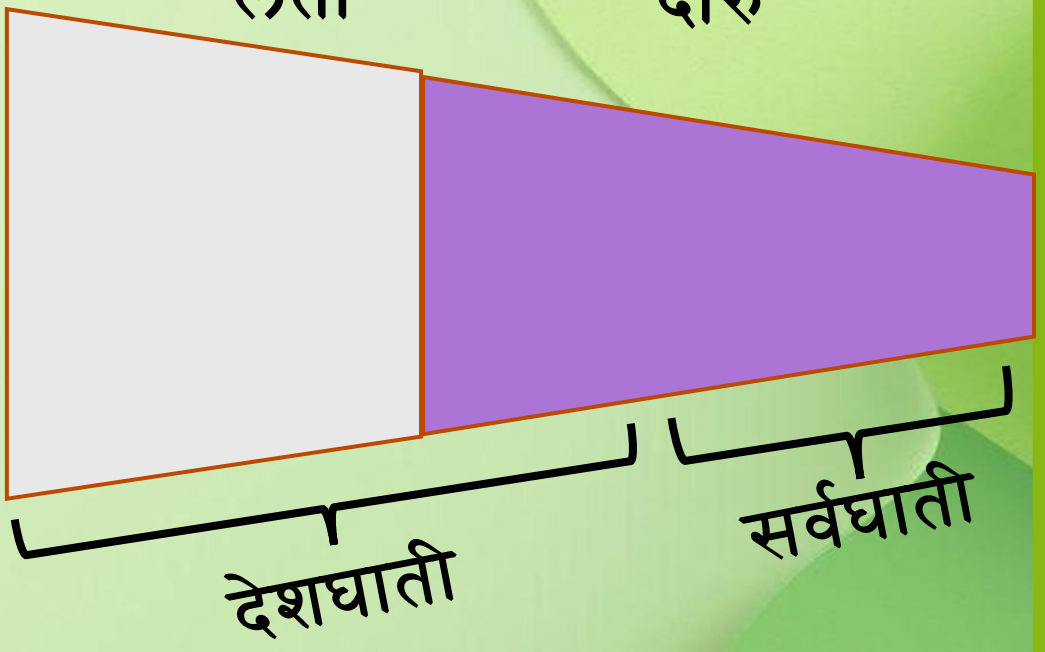

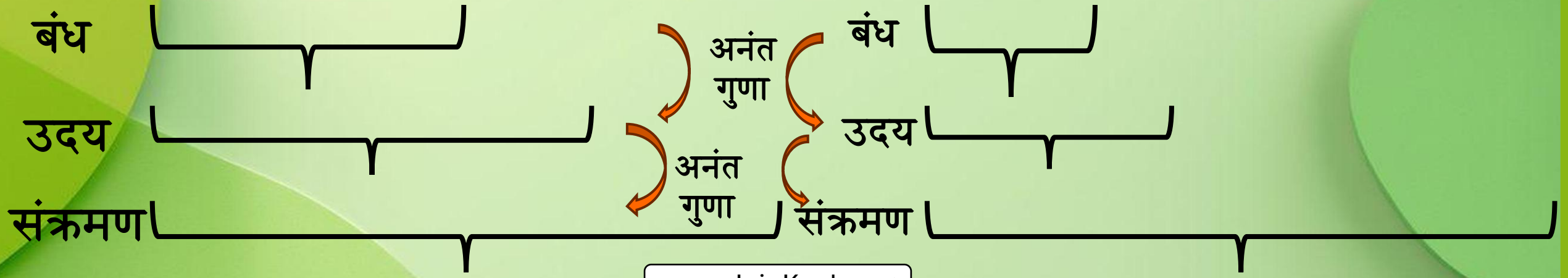

www.JainKosh.org

गुणसेढि अणंतगुणेणूणा य वेदगो दु अणुभागो ।
गणणादियंतसेढी, पदेसअग्गेण बोधव्वा ॥455॥

- अन्वयार्थः अप्रशस्त प्रकृतियों के (अणुभागो) अनुभाग का प्रत्येक समय में (अणंतगुणेणूणा गुणसेढि) अनन्तगुणित हीन गुणश्रेणिरूप से (वेदगो दु) वेदक होता है,
- किन्तु (पदेसअग्गेण) प्रदेशाग्र की अपेक्षा (गणणादियंतसेढी) गणनातिक्रान्त अर्थात् असंख्यातगुणित श्रेणिरूप से उदय (बोधव्वा) जानना चाहिए ॥455॥

www.JainKosh.org

घटता अनुभाग-उदय, बढ़ता प्रदेशोदय

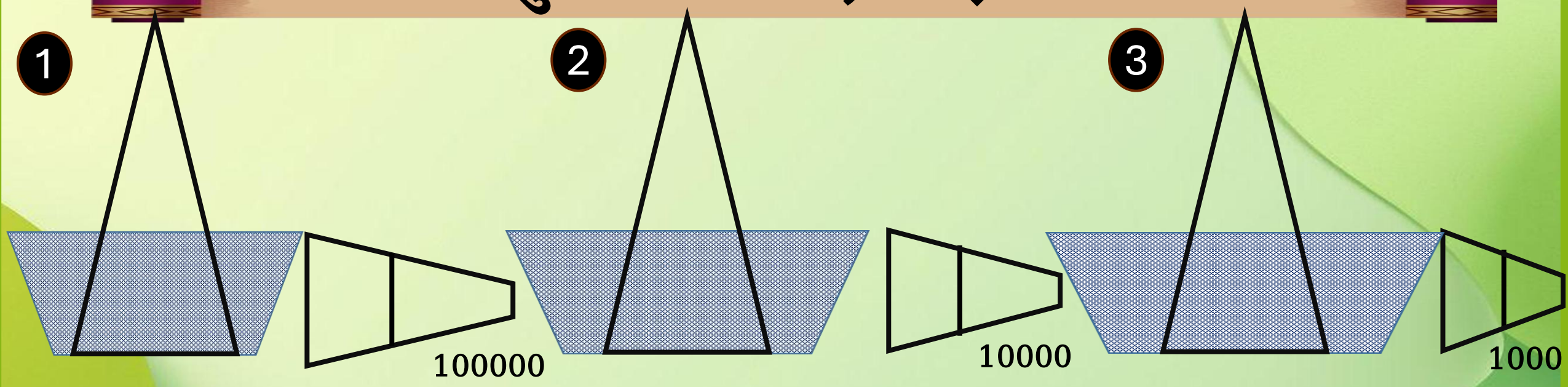

अप्रशस्त प्रकृतियों का प्रतिसमय अनंतगुणाहीन श्रेणिरूप से वेदक होता है । क्योंकि परिणामों की विशुद्धि अनंतगुणा बढ़ती है ।

परंतु प्रदेशों की अपेक्षा असंख्यात गुणा कर्म-प्रदेशों का वेदक होता है । क्योंकि गुणश्रेणि निर्जरा भी हो रही है, जिससे प्रत्येक समय असंख्यात गुणा कर्म-प्रदेश निर्जरित होते हैं ।

बंधोदएहि णियमा, अणुभागो होदि णंतगुणहीणो ।
से काले से काले, भज्जो पुण संकमो होदि ॥456॥

- अन्वयार्थः (से काले) तदनन्तर समय में (बंधोदएहि) बंध और उदय की अपेक्षा (अणुभागो) अनुभाग (णियमा) नियम से (णंतगुणहीणो) अनन्तगुणा हीन होता है।
- (पुण) पुनः (से काले) उसके अनन्तर समय में (संकमो) संक्रमण (भज्जो होदि) भजनीय है ॥456॥

www.JainKosh.org

अनंतर समयों में अनुभाग-बंध, उदय, संक्रमण

पद	विवक्षित समय	अनंतर समय
अनुभाग -बंध	अनंत	अनंतगुणाहीन
अनुभाग -उदय	अनंत	अनंतगुणाहीन
अनुभाग -संक्रमण	अनंत	भजनीय

संक्रमण भजनीय है याने

1) अनंतर समय में उतने ही अनुभाग का संक्रमण होता है जितना पहले हुआ था । अथवा

2) पूर्व से अनंतर समय में अनंतगुणाहीन अनुभाग का संक्रमण होता है ।

ऐसा अंतर क्यों होता है? – उसे आगे की गाथा में कहते हैं ।

www.JainKosh.org

संकमणं तदवट्ठं, जाव दु अणुभागखंडयं पडिदि । अण्णाणुभागखंडे, आढंते णंतगुणहीणं ॥457॥

- अन्वयार्थः (जाव दु अणुभागखंडयं पडिदि) अनुभागकांडक का पतन होने तक (संकमणं) संक्रमण (तदवट्ठं) अवस्थित होता है।
- (अण्णाणुभागखंडे आढंते) अन्य अनुभागखण्ड के प्रारम्भ होने पर (पूर्व से) (णंतगुणहीणं) अनन्तगुणा घटता अनुभाग-संक्रमण होता है ॥457॥

www.JainKosh.org

संक्रमण भजनीय कैसे ?

एक अनुभागकांडक में अंतर्मुहूर्त काल लगता है ।

प्रत्येक समय कांडक प्रमाण आयाम के कुछ प्रदेशों का संक्रमण होता है । परंतु सत्त्व पूर्ववत् बना रहता है । एक स्पर्धक जितना भी अनुभागस्थान कम नहीं होता ।

अनुभागकांडक की अंतिम फाली का पतन होने पर अनंत बहुभाग प्रमाण अनुभाग एक साथ नष्ट हो जाता है ।

तदनंतर समय में शेष अनुभाग का ही संक्रमण होता है ।

चूंकि यह शेष अनुभाग; पूर्व सत्त्व का अनंतवां भाग है । अतः इस समय किया जाने वाला संक्रमण अनंतगुणा हीन होता है ।

संक्रमण भजनीय कैसे?

प्रथमादि समयों में संक्रमण

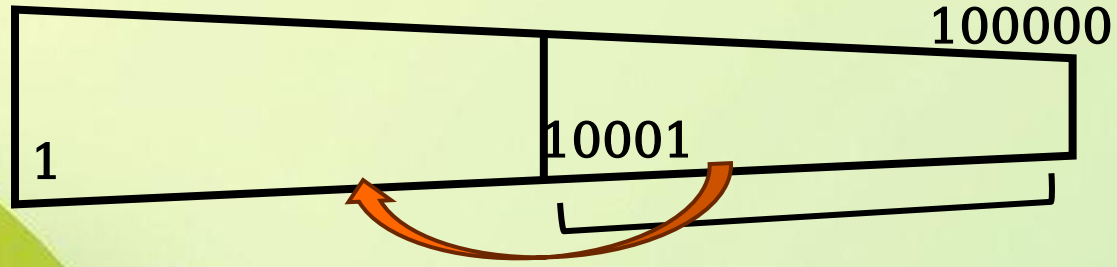

कांडकघात के बाद प्रथमादि समयों में संक्रमण

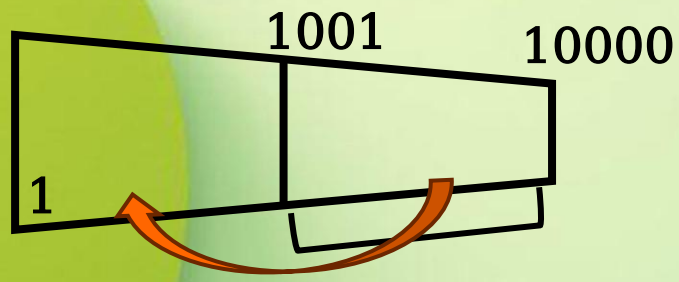

कांडकघात के बाद प्रथमादि समयों में संक्रमण

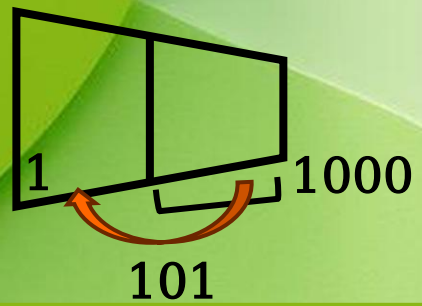

इसके बाद के प्रत्येक समय में अनुभागकांडक की अंतिम फाली के पतन तक उतने ही अनुभाग का संक्रमण होता है ।

जब-जब कांडकघात पूर्ण होता है । तदनंतर समय में अनुभागसंक्रमण अनंत गुणाहीन होता है ।

www.Jain

सत्तण्हं संकामग-चरिमे पुरिसस्स बंधमडवस्सं ।
सोलस संजलणाणं, संखसहस्साणि सेसाणं ॥458॥

- अन्वयार्थः (सत्तण्हं संकामगचरिमे) सात नोकषायों के संक्रमण के अंतिम समय में
- (पुरिसस्स) पुरुषवेद का (बंध) स्थिति-बंध (अडवस्सं) आठ वर्ष प्रमाण,
- (संजलणाणं) संज्वलन कषायों का (सोलस) सोलह वर्ष प्रमाण
- और (सेसाणं) शेष छह कर्मों का (संखसहस्साणि) संख्यात हजार वर्ष प्रमाण होता है ॥458॥

www.JainKosh.org

7 नोकषायों की क्षपणा के अंतिम समय स्थिति-बंध

कर्म	बंध	अल्प-बहुत्व
पुरुषवेद	8 वर्ष	स्तोक
4 कषाय	16 वर्ष	संख्यात गुणा
3 घातिया	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
नाम-2	संख्यात हजार वर्ष	संख्यात गुणा
वेदनीय	संख्यात हजार वर्ष	विशेष अधिक

8 वर्ष प्रमाण स्थिति-बंध ही पुरुषवेद का जघन्य स्थिति-बंध है । यहाँ पुरुषवेद की बंध-व्युच्छित्ति हो जाती है ।

यहाँ ही पुरुषवेद की उदय-व्युच्छित्ति हो जाने से अपगतवेदी हो जाता है ।

ठिदिसंतं घादीणं, संखसहस्साणि होंति वस्साणं ।
होंति अघादितियाणं, वस्साणमसंखमेत्ताणि ॥459॥

- अन्वयार्थ: उसी अंतिम समय में (घादीणं ठिदिसंतं) घातिया कर्मों का स्थिति-सत्त्व (वस्साणं संखसहस्साणि) संख्यात हजार वर्ष प्रमाण (होंति) होता है। और
- (अघादितियाणं) तीन अघातिया कर्मों का स्थिति-सत्त्व असंख्यात वर्ष होता है ॥459॥

www.JainKosh.org

7 नोकषायों की क्षपणा के अंतिम समय स्थिति-सत्त्व

कर्म	सत्त्व	अल्प-बहुत्व
घातिया कर्म	संख्यात वर्ष	स्तोक
नाम-गोत्र	असंख्यात वर्ष	असंख्यात गुणा
वेदनीय	असंख्यात वर्ष	विशेष अधिक

www.JainKosh.org

पुरिसस्स य पढमट्ठिदि, आवलिदोसुवरिदासु आगाला । पडिआगाला छिण्णा, पडिआवलियादुदीरणदा ॥460॥

- अन्वयार्थः (पुरिसस्स) पुरुषवेद की (पढमट्ठिदि) प्रथम स्थिति में (आवलिदोसुवरिदासु) दो आवलि शेष रहने पर (आगाला पडिआगाला) आगाल व प्रत्यागाल (छिण्णा) नष्ट होते हैं
- (य) और केवल (पडिआवलियादुदीरणदा) प्रत्यावली में से उदीरणा होती है ॥460॥

www.JainKosh.org

पुरुषवेद की प्रथम स्थिति में इतना काल शेष रहने पर संभव कार्य

काल शेष रहने पर	आगाल-प्रत्यागाल	गुणश्रेणी	उदीरणा	क्षपणा
2 आवली से अधिक रहने पर	✓	✓	✓	✓
2 आवली रहने पर	✗	✗	✓	✓
1 आवली + 1 समय रहने पर	✗	✗	✓	✓
1 आवली रहने पर	✗	✗	✗	✓
1 समय शेष रहने पर	✗	✗	✗	✓

www.JainKosh.org

पुरुष वेद की जघन्य उदीरणा

1

मात्र 2 आवली
शेष रहने पर

2

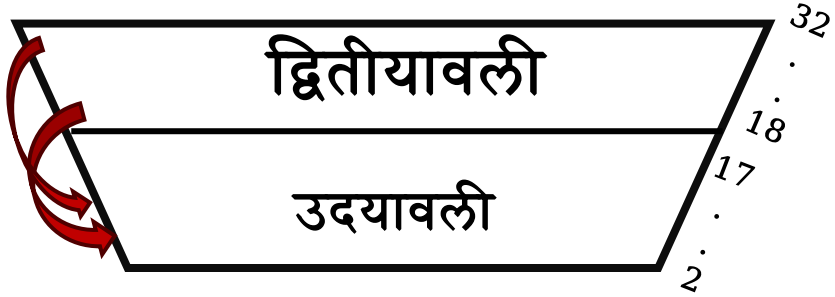

अगले समय

3

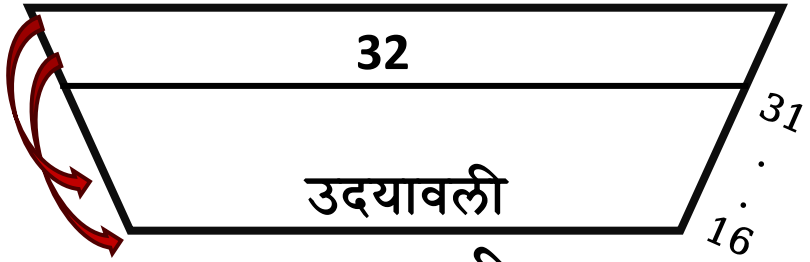

जघन्य उदीरणा
अंतिम उदय

4

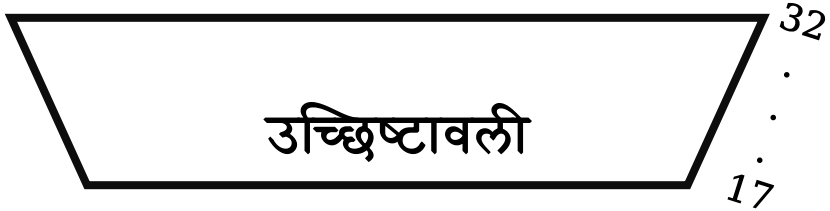

1 आवली शेष रहने पर
उदीरणा का अभाव

पुरुष वेद की क्षपणा प्रथम स्थिति के अंत समय तक चलती है ।

जो अनिवृत्तिकरण के अंत में बंधा पुरुष वेद है, उसकी क्षपणा प्रथम स्थिति समाप्त होने के पश्चात् भी (2 आवली – 1) समय तक चलती है।

अंतरकदपढमादो, कोहे छण्णोकसाययं छुहदि ।
पुरिसस्स चरिमसमए, पुरिसवि एदेण सव्वयं छुहदि ॥461॥

- अन्वयार्थः (अंतरकदपढमादो) अन्तरकरण करने पर प्रथम समय से (छण्णोकसाययं) छह नोकषायों को (कोहे) संज्वलन क्रोध में (छुहदि) संक्रमित करता है।
- (पुरिसस्स चरिमसमए) पुरुषवेद के अंतिम समय में (एदेण) छह नोकषायों के साथ (सव्वयं पुरिसवि) पुरुषवेद का भी सर्वद्रव्य संज्वलन क्रोध में (छुहदि) संक्रमित करता है ॥461॥

www.JainKosh.org

6 नोकषायों का क्षय

अंतरकरण करने के समय से आनुपूर्वी संक्रमण प्रारंभ हुआ था, जिससे 6 नोकषायों का द्रव्य संज्वलन क्रोध में ही संक्रमित होना प्रारंभ हुआ था ।

यहाँ 6 नोकषायों के अंतिम कांडक की चरम फालि में सर्व स्थिति-सत्त्व के सर्व द्रव्य को सर्वसंक्रमण द्वारा संज्वलन क्रोध में संक्रमित करता है ।

इससे 6 नोकषायों का संपूर्ण रूप से नाश हो जाता है । इसकी उदयावली थी ही नहीं । अतः उच्छिष्टावली भी नहीं है । बंध था ही नहीं, अतः नवक समयप्रबद्ध भी नहीं बचे ।

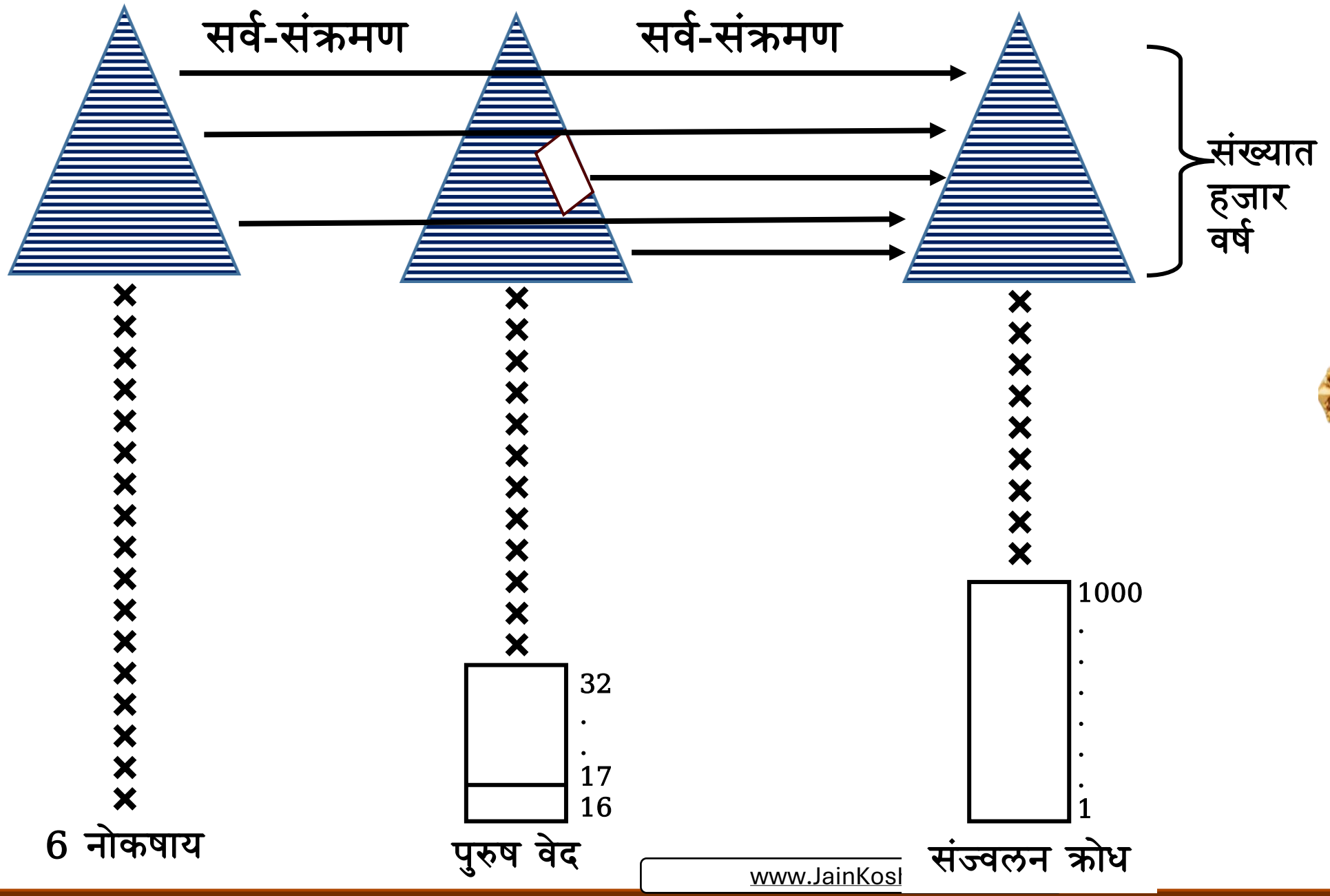

सवेद भाग का अंतिम समय

www.JainKosl

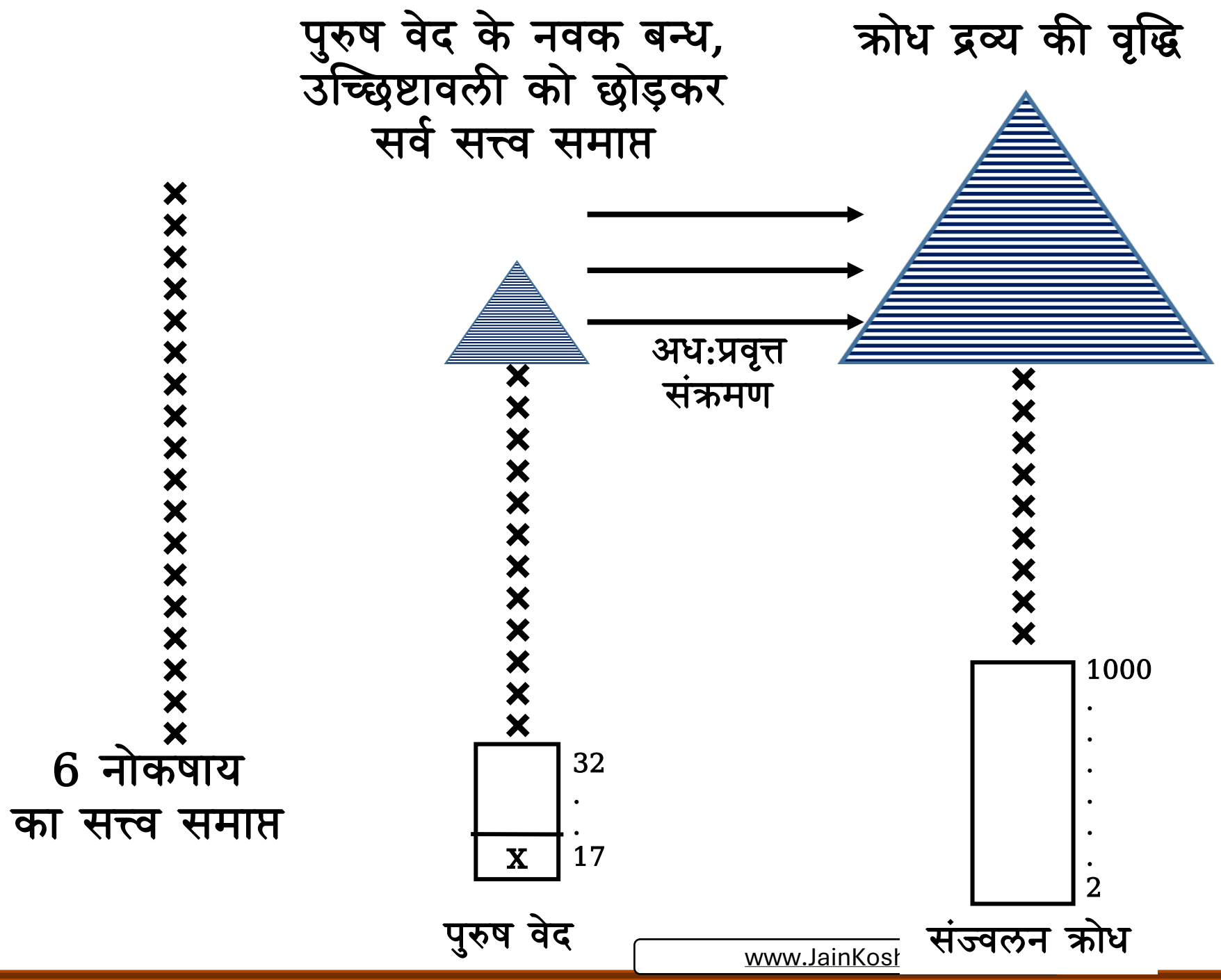

पुरुष वेद के नवक बन्ध, उच्छिष्टावली को छोड़कर सर्व सत्त्व समाप्त
क्रोध द्रव्य की वृद्धि
अध:प्रवृत्त संक्रमण
6 नोकषाय का सत्त्व समाप्त
32
17
x
पुरुष वेद
1000
2
संज्वलन क्रोध
अपगत वेद का प्रथम समय
www.JainKosh

समऊणदोण्णि-आवलिपमाणसमयप्पबद्धणवबंधो ।
बिदिये ठिदिये अत्थि हु, पुरिसस्सुदयावली च तदा ॥462॥

- अन्वयार्थः (तदा) उसी समय (पुरिसस्स) पुरुषवेद का (बिदिये ठिदिये) द्वितीय स्थिति में (समऊणदोण्णि-आवलिपमाण समयप्पबद्धणवबंधो) एक समय कम दो आवलिप्रमाण नवक समयप्रबद्ध (च) और (उदयावली) उदयावलि (अत्थि) शेष रहती है ॥462॥

www.JainKosh.org

पुरुषवेद की क्षपणा

सवेद भाग के अंतिम समय में पुरुषवेद की अंतिम फाली का पतन होता है । तब पुरुषवेद का सारा सत्त्व द्रव्य संज्वलन क्रोध में संक्रमित होता है ।

परंतु ये दो द्रव्य अनंतर समय में शेष रह जाते हैं:

- द्वितीय स्थिति में (2 आवली – 1) समय प्रमाण नवक समयप्रबद्ध
- प्रथम स्थिति में उच्छिष्टावली प्रमाण समयप्रबद्ध

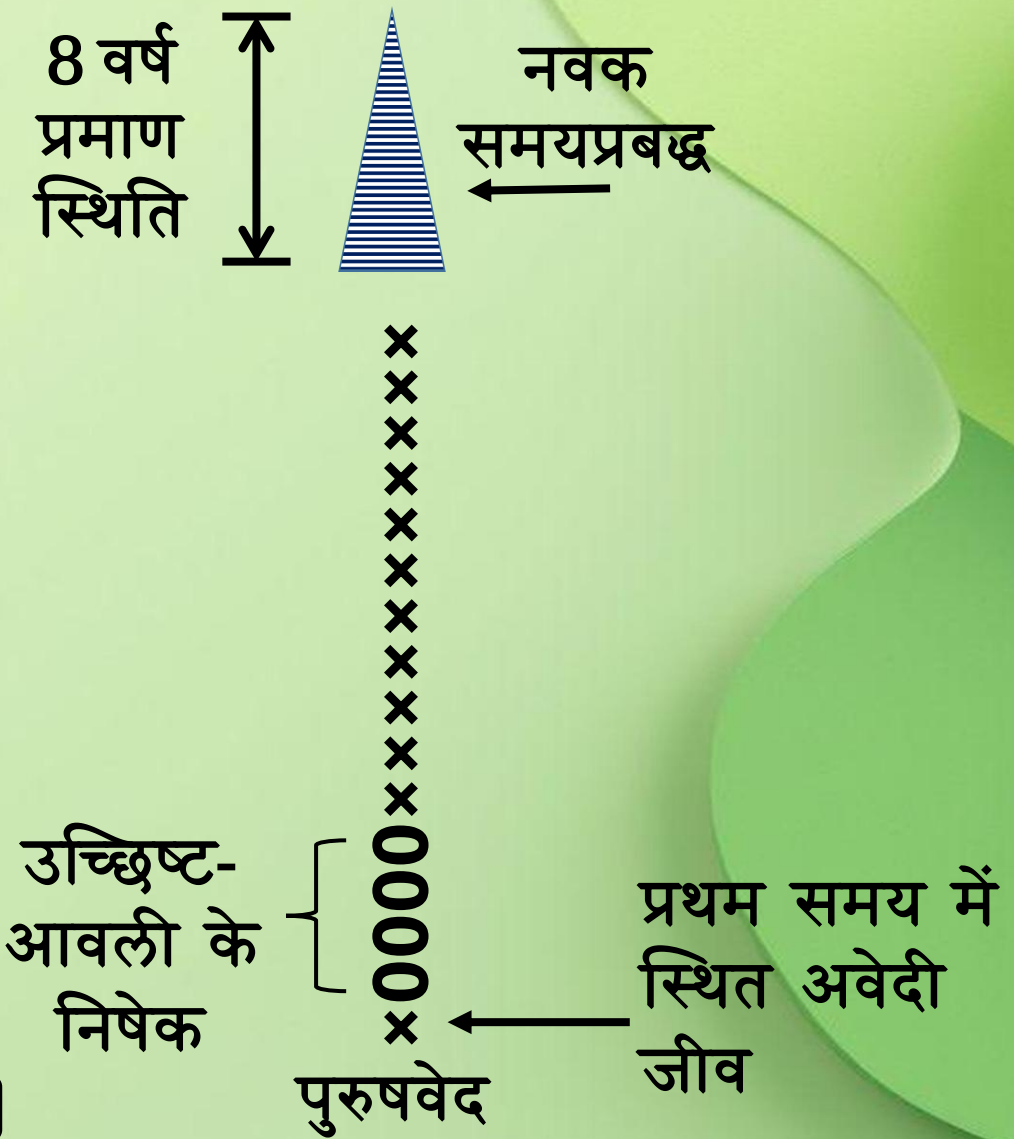

www.JainKosh.org

उच्छिष्ट आवली के निषेक

उच्छिष्ट + आवली = उच्छिष्टावली ।

जो भोगने से शेष रह गया, ऐसे आवली प्रमाण कर्म निषेकों को उच्छिष्टावली कहते हैं ।

पुरुषवेद की उदय-व्युच्छित्ति होने पर भी प्रथम स्थिति में उसके एक आवली प्रमाण निषेक मौजूद हैं ।

ये स्वमुख से अब उदय में नहीं आ सकते क्योंकि पुरुषवेद की उदय-व्युच्छित्ति हो चुकी है ।

इन 1 आवली प्रमाण निषेकों को उच्छिष्टावली कहते हैं ।

ये एक-एक करके स्तिबुक संक्रमण के द्वारा उदयवान प्रकृति में संक्रमित होकर एक आवली काल में समाप्त हो जायेंगे ।

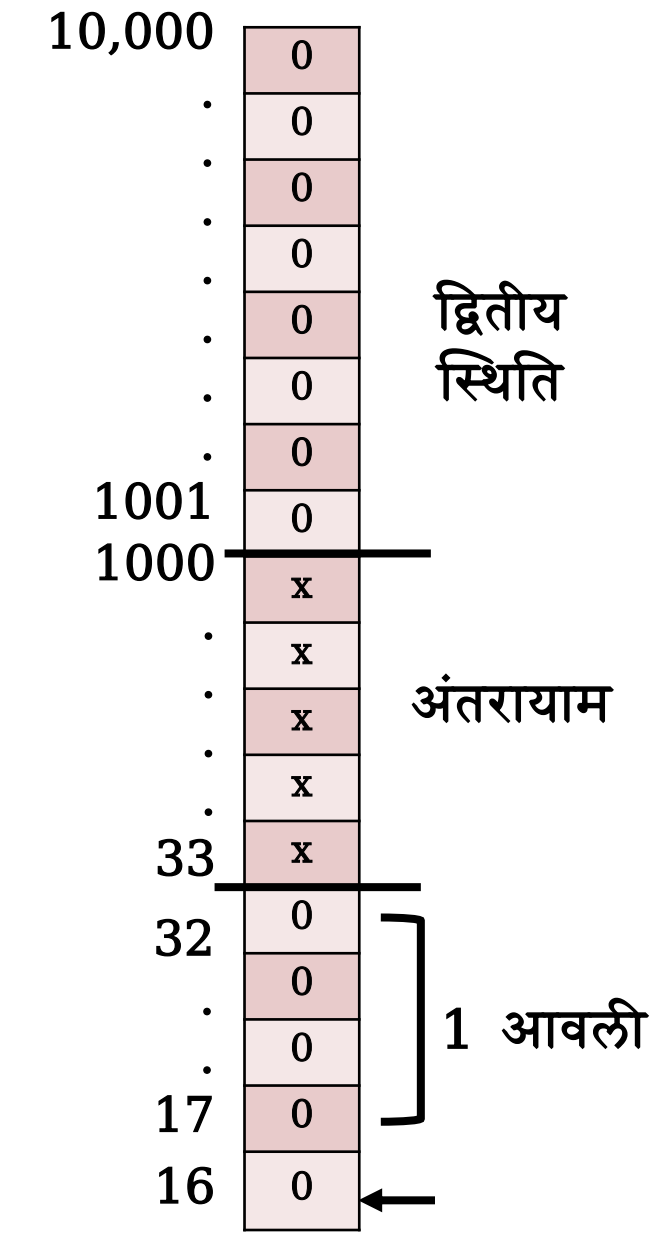

सवेदी का अंतिम समय

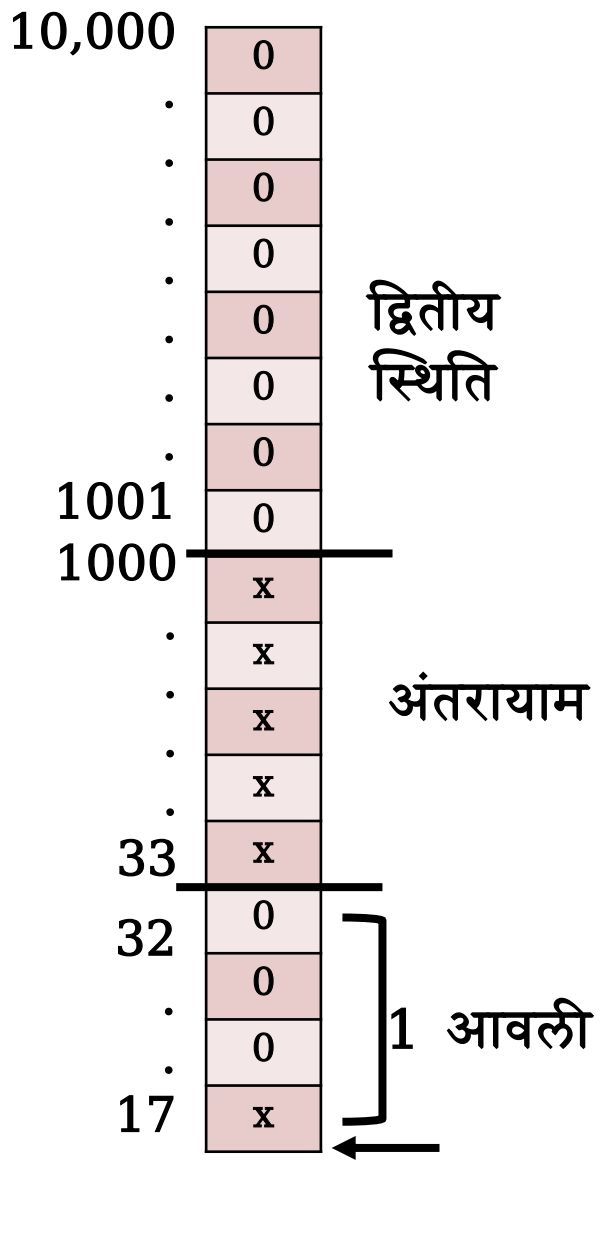

अवेद का पहला समय

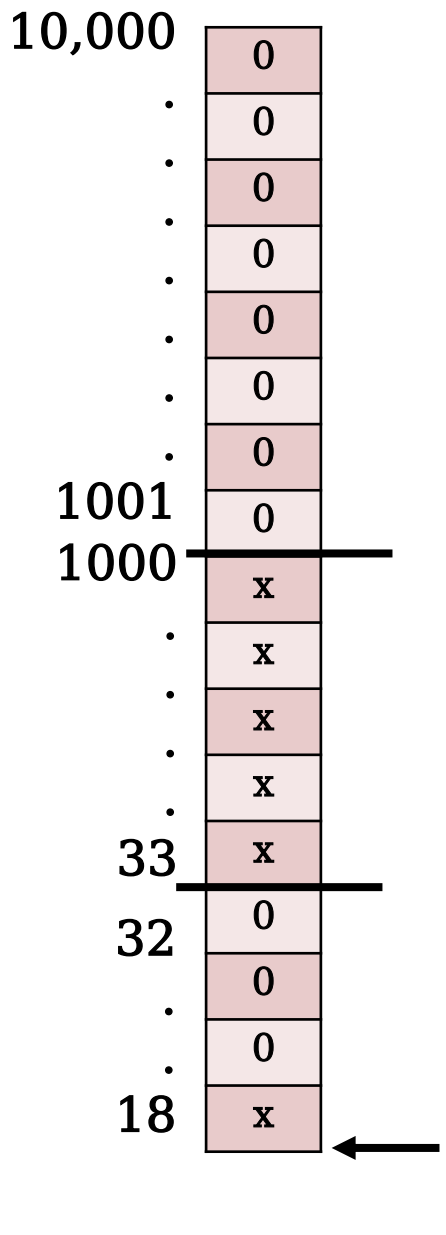

अवेद का दूसरा समय

पुरुषवेद के उच्छिष्ट-आवली के निषेक

हास्यादि 6 नोकषाय के साथ पुरुषवेद की भी क्षपणा हुई है ।

तथापि हास्यादि नोकषाय के सर्व सत्त्व द्रव्य की क्षपणा हो जाने पर भी उस काल में पुरुषवेद के सर्व सत्त्व द्रव्य की क्षपणा नहीं हुई है क्योंकि पुरुषवेद का बंध भी साथ में चल ही रहा था ।

जो पुरुषवेद के नवक (नवीन) समयप्रबद्ध; बंध को प्राप्त हुए हैं, उनकी क्षपणा अभी शेष है ।

क्योंकि बंध होने के एक आवली काल तक बद्ध कर्म में कुछ भी उत्कर्षण, क्षपणा आदि क्रियायें नहीं हो सकती।

कितने नवक समयप्रबद्ध अक्षपित ?

2 आवली – 1 समयप्रबद्ध की क्षपणा शेष है

विशेष क्रम देखने के लिए गाथा 263 में देखें ।

ध्यान रहे - ये सारे समयप्रबद्ध द्वितीय स्थिति में स्थित हैं।

							०	१
						०	१	२
उच्छिष्टावली					०	१	२	३
				०	१	२	३	४
			०	१	२	३	४	४
		०	१	२	३	४	४	४
चरमावली	०	१	२	३	४	४	४	४
	१	२	३	४	४	४	४	
	२	३	४	४	४	४		
	३	४	४	४	४			
द्विचरमावली, बंधावली	४	४	४	४				
	४	४	४					
	४	४						
	४							
समयप्रबद्ध	A	B	C	D	E	F	G	H

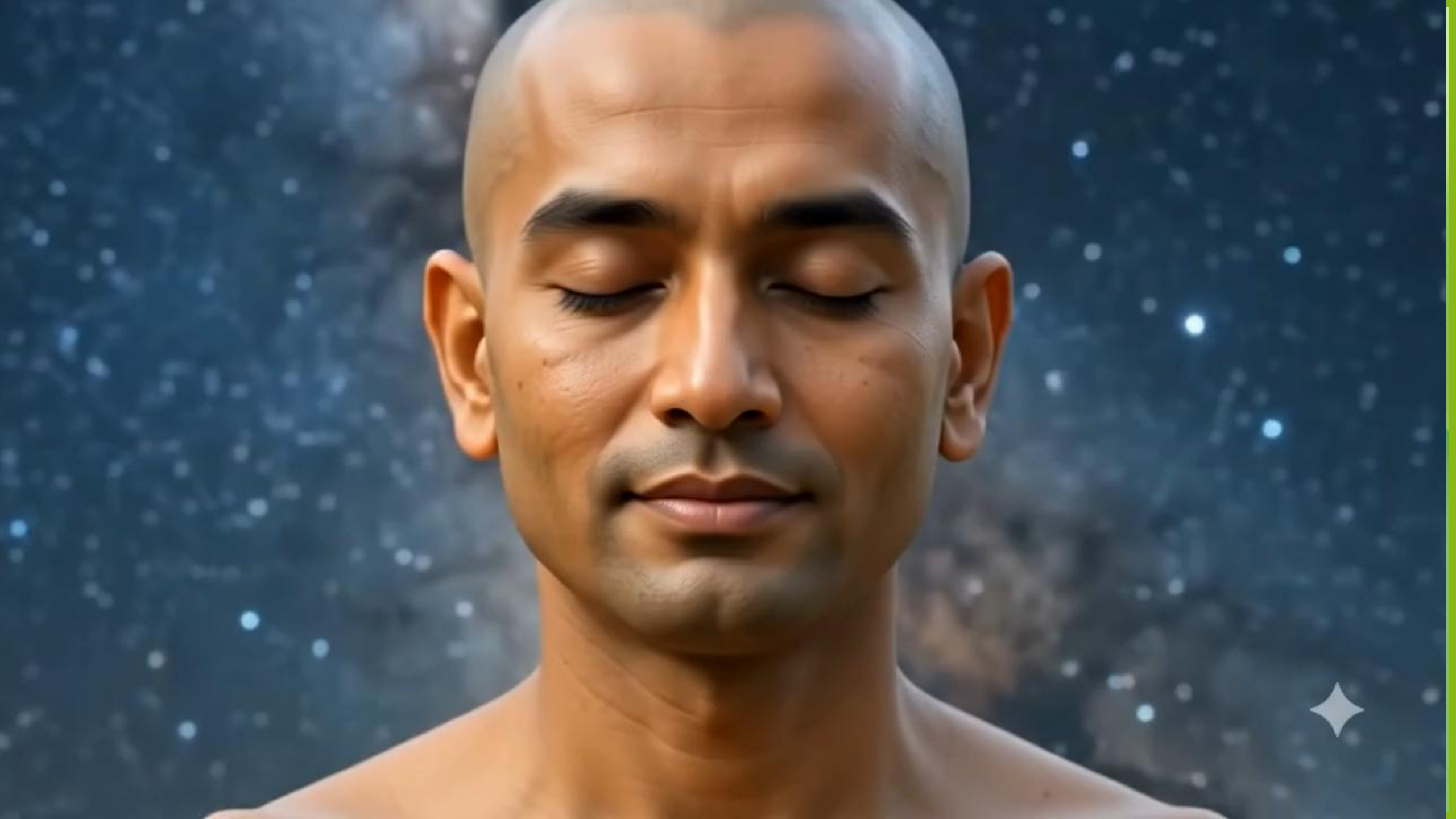

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889
- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।